# Navchetana Homilies

## JUNE 2, 2019

Is 6:1-13

Act 1:15-26

Phil 2:1-11

Mk 16:14-20

## पुनरूत्थान काल का सातवाँ रविवार

एक बार एक गाँव की निःशब्द गली से एक छोटी लड़की की पापा–पापा कहकर चिल्लाने की आवाज़ पूरे गाँव भर में गूँज उठी। गाँव वालो ने उसकी आवाज़ सुनी, उन्हें मालूम था कि ज़मीदार के आदमी आकर उस बच्ची के पिता का अपहरण करके उसे ले जा रहे हैं। क्योंकि उसने ज़मीदार के विरूद्ध बयान दिया था। गाँव वालों के मन में कई प्रकार के विकार उत्पन्न हुए। सबके मन में उस बच्ची और उसके पिता के लिए सहानुभूति उत्पन्न हुई। कुछ लोग ज़मीदार पर क्रोधित होने लगे, लेकिन किसी में भी ज़मीदार के विरूद्ध खड़े होकर उनकी मदद करने की हिम्मत नहीं थी। सब लोग अपनी और अपने परिवार की सुरक्षा की बात सोच रहे थे। लेकिन एक नवयुवक पुलिसवाले ने भी उस बच्ची की पुकार सुनी थी और उसने अपनी जान की परवाह किये बिना अपना कर्तव्य निभाया। उसने ज़मीदार के आदमीयों से

उस बच्ची के पिता को छुड़ाया और इसी प्रयत्न में उसने अपना जीवन भी खो दिया। मेरे भाईयों उस युवक ने अपने जीवन का बलिदान करके अपने मिशन को पूरा किया।

आज के सुसमाचार में भी हम देखते हैं कि येसु ख्रिस्त अपने शिष्यों को प्रेरिताई कार्य हेतु भेजते हैं। यह कार्य नया नहीं है, इसे येसु स्वयं कर चुके थे। अपने पिता द्वारा सौंपे गये कार्य को पूरा करने के लिए येसु ख्रिस्त इस संसार में आए। स्वर्गराज्य की घोषणा करने, अंधविश्वास और धार्मिक विधियों की गुलामी से लोगों को मुक्त करने, भटके हुए को ईश्वर की ओर वापस लाने, दुःखित को सान्त्वना देने, निराश्रितों के मन में आशा जगाने, कमज़ोरों एवं पद दलितों को बल प्रदान करने के लिए पिता ईश्वर ने अपने पुत्र को इस संसार में भेजा। इस प्रकार येसु ख्रिस्त ने सबकी सहायता करके अपना प्रेरिताई कार्य पूरा किया। येसु ख्रिस्त ने यहाँ की विपरित परिस्थितियों और वातावरण में अपना कार्य पूरा किया।

वे कभी भी अपने बारे में नहीं सोचते थे। हमेशा हर वचन और क्रियाओं में औरों का ख्याल रखते थे क्योंकि परमपिता द्वारा दिया गया उनका मिशन न्याय संगत है। इसलिए वे अपना तन–मन लगाकर पूर्ण समर्पण और वचन–बद्धता के साथ उसकी पूर्ति में लग गये।

भाईयों और बहनों, ख्रीस्त के शिष्य होने के नाते, ख्रिस्तीय होने के नाते, मानव होने के नाते हम सबों को पूरा करने के लिये कार्य एंव कर्तव्य सौंपे गये हैं। पहले सुनायी गयी कहानी में उस पुलिसवाले नवयुवक के भाँति अन्य लोगों का जीवन बचाने का मिशन हमें सौंपा गया है। आज गरीबों और पिड़ितों की मदद की पुकार अनसुनी कर दी जाती है। सड़क के अगल–बगल कितने ही विकलांग, अपंग, तिरस्कृत और अनचाहे लोग हमारी कृपा की माँग करते हैं। हम अपने आपकों जाँच कर देखें कि हमने उन लोगों के लिए क्या किया?

निश्चय ही हम लोगों का कार्य सरल नहीं है। येसु कहते हैं– "मैं तुम्हें भेड़ियों के बीच भेड़ों की तरह भेजता हूँ, अपने साथ कुछ भी लेकर मत जाओ।" इन वाक्यों का संकेत है कि निश्चय ही हमारे कार्य में संकट है, खतरा एवं कठिनाईयाँ है किन्तु उसका मतलब यह नहीं कि हम इन कठिनाईयों से दूर भागे। येसु ख्रिस्त के समान हमें भी अपने मिशन की पूर्ति के लिए अपने को संपूर्णतः समर्पित करना है।

हमें चाहिए कि हम अपने प्रेरिताई कार्य संपादन के लिए अपनी सुख सुविधाओं को त्याग दे और शायद अपने जीवन को भी, ईश्वर ने हमारी मानवीय कमजोरियों को नहीं भूलाया है। वे जानते हैं कि हम कमजोर हैं। इसलिए वे कहते हैं– "मैं संसार के अंत तक तुम्हारे साथ रहूँगा।" इसलिए हम न

भूले कि हमारे प्रभु येसु हमारे साथ हैं। जहाँ कहीं भी जाऐं वे हमारे साथ चलते हैं। हमें दिये गए कार्य को आगे बढ़ाने के लिए उन्होंने न केवल अधिकार दिया बल्कि अपनी शक्ति भी दी है। याद रखिये कि हम येसु ख्रिस्त के अनुयायी हैं। दूसरों के लिए जितनी भी भलाई हो सके करने का प्रयास करें। इसके लिए हम इस मिस्सा बलिदान में ईश्वर की कृपा पाने के लिए प्रार्थना करें।

Fr. Rinto Poruthukaran CMI